एम0ए0 प्रथम वर्ष/ प्रथम सेमेस्टर
परीक्षा 2021–22
विषय–हिन्दी साहित्य
प्रश्नपत्र– द्विवेदी युगीन एवं छायावादी काव्य
प्रश्न पत्र कोड – MHL- C 111
समय 3 घण्टे अधिकतम अंक–70

नोट– प्रश्न पत्र दो खण्डों (अ व ब) में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(खण्ड–अ)
लघु उत्तरीय प्रश्न

नोट–किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है। **5x6=30**

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 2. आधुनिक मीरा के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 3. श्रद्धा सर्ग का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
प्रश्न 4. कामायनी में वर्णित प्रत्यभिज्ञा दर्शन को समझाइए।
प्रश्न 5. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की मुख्य रचनाओं का वर्णन कीजिए।
प्रश्न 6. पंत के काव्य में प्रकृति वर्णन पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 7. निराला की राम की शक्ति पूजा के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 8. परिवर्तन कविता का मूल प्रतिपाद्य क्या है?
प्रश्न 9. कामायनी का मूल संदेश क्या है? संक्षेप में बताइए।
प्रश्न 10. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' की काव्यगत विशेषताओं का संक्षेप में परिचय दीजिए।

(खण्ड ब) (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का विस्तृत उत्तर अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है। **2x10 =20**

प्रश्न 1. साकेत के नवम् सर्ग के आधार पर उर्मिला के विरह–वर्णन की विस्तृत विवेचना कीजिए।
प्रश्न 2. कामायनी के सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
प्रश्न 3. निराला की प्रगतिवादी चेतना को विस्तार से समझाइए।
प्रश्न 4. 'सुमित्रा नन्दन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि हैं' इस उक्ति की विस्तृत विवेचना कीजिए।

व्याख्या

नोट– किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। प्रत्येक व्याख्या 10 अंक की है। **2x10=20**

अ ''साधु, साधु, साधक धीर, धर्म–धन धन्य राम!''
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कर्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पाद पद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वरवन्दन कर।

ब. पहेली–सा जीवन है व्यस्त
उसे सुलझाने का अभिमान,

बताता है विस्मृति का मार्ग
चल रहा हूँ बनकर अनजान।
भूलता ही जाता दिन–रात
सजल अभिलाषा कलित अतीत;
बढ़ रहा तिमिर गर्भ में नित्य,
दीन जीवन का यह संगीत।

स. अहे निष्ठुर परिवर्तन!
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!

स. जीवन के पहले प्रभात में आँख खुली जब मेरी,
हरी भूमि के पात पात में मैंने हृद्‌गति हेरी।
खींच रही थी दृष्टि सृष्टि यह स्वर्ण रश्मियाँ लेकर,
पाल रही ब्रहमाण्ड प्रकृति थी, सदय हृदय में सेकर।
तृण तृण को नभ सींच रहा था बूँद बूँद रस देकर,
बढ़ा रहा था सुख की नौका समयसमीरण खेकर।
बजा रहे थे द्‌विज दल–बल से शुभ भावों की भेरी,
जीवन के पहले प्रभात में आँख खुली जब मेरी।